मैथिली 'प्रतिष्ठा'
बी० ए० (आनर्स) पार्ट-II
Notes पेपर-III

(1)

बसंत कुमार
अतिथि शिक्षक
दिनांक 04-04[redacted]20

1. मृगतृष्णाये कवलित भए गेलि छ. कितारल नियोगी अइसन आदित्य भए गेल छथि. तुसक अगिन अइसनी उष्ण धुनि धरनी भए गेलि अछ. दरिद्रक हृदय अइसनि संतप्ति पृथ्वी भेल अछ. उन्मूलन निपक्ष अइसन जलाश्रये भए गेल छ. पथिकन्हि पथसञ्चार त्यजि हलु श्वापदन्हि छाया आश्रये करु. युवतिन्हि जलकेलि आरहु. ब्राह्मणे मध्यान्ह आरहु. दिनकर दीर्घता. रात्रिक संकोच. पृथ्वीक कर्कशता रौद्रक तीक्ष्णता. चातक तृष्णा. जलाशयक दारिद्रता. दानावलक प्रचण्डता. पर्वतक संकोच. असंतुष्टि तृषा. उष्मक बाहुल्य. पवनक वाञ्छा. शीतक उत्कंठा एवम्विध ग्रीष्मसमयक मध्यान्ह देषु। व्याख्या करु -

व्याख्या : प्रस्तुत पांती ज्योतिरीश्वर रचित वर्णना शीर्षक 'मध्यान्ह वर्णना' सँ लेल गेल अछि। जे संकलन पोथीमे अछि। ग्रीष्म ऋतुमे मृगतृष्णाक भास होइछ। सुर्यदेव कोनो क्रुद्ध फकीर जकाँ भ' गेल छथि। धरती भूसाक आगि जकाँ तप्त भ' गेल अछि। दरिद्रक हृदय जकाँ हाहाकार पृथ्वी क' रहली अछि। पृथ्वीक सभ पोखरि पानि विहिनं भ' गेल अछि। बाट-बटोही गमना-गमन छोड़ि क छायाक आश्रय ग्रहण करैत अछि। तपित युवतीगण जल क्रीड़ासँ शांत भेलीह। ब्राह्मण मध्यान्हक अपेक्षा करैत छथि। मुदा ग्रीष्ममे दिन पैघ भ' गेल अछि। रात्री छोट। पृथ्वी कठोर, कर्कश भ' गेलीह तैँ रौद्र रुप धारण कयने प्रतीत होइत अछि। चातक पक्षी प्याससँ व्याकुल छथि। पोखरिक पानि शून्य

दिनांक-04-04-2020

Notes

भेल अछि। आर्द्रक प्रचण्डतामे वृद्धि भ' गेल अछि। पर्वत शंकुचित भ' गेल अछि। तृष्णा अपूरित भ' गेल। शैत्यक बहुलता बसातक आकांक्षी, शीतक जिज्ञाशा होइत अछि। एहन विकट ग्रीष्म ऋतु केँ मध्यान्ह कालक नामसँ जानल जाइत अछि वा मध्यान्ह काल कहाबैत अछि।